चलो आली देखें लाली झुलन बहार,
झूलें झूला लाली झुलवहिं रिझवार।
झूला डर्‌यो गहवर कुंज मझार,
रिमझिम रिमझिम परत फुहार।
गावें मिलि ब्रजनार राग मलार,
बाजे वीणा वेणु ढप ढोल इकसार।
कूके पिक नाचे मोर पंख पसार,
फूलें फूल चंपा जुही बेला कचनार।
बिच बिच बोलें अलि मिलि बलिहार,
बरसावे कुसुम कदंबनि डार।
जड़ तरुगन तन पुलक अपार,
चेतन खग मृग जड़ अनुहार।
श्यामा श्याम बाम सुधि देह बिसार,
लखत 'कृपालु' शिव गोपी तनु धार।

भावार्थ—एक सखी दूसरी सखी से कहती है-हे सखी! चलो श्रीराधा का झूलन उत्सव देखें। श्रीराधा झूला झूल रही हैं और श्रीकृष्ण झुला रहे हैं। गह्वर-वन की किसी कुंज में वृक्ष की डाल पर झूला पड़ा है। वर्षा की फुहारें पड़ रही हैं। ब्रज-गोपियाँ मल्हार राग गा रही हैं। वीणा, वेणु ढप एवं ढोल आदि वाद्य एक स्वर से बज रहे हैं। कोयल 'कुहू' 'कुहू' की ध्वनि कर रही है। मयूर पंख फैलाकर नृत्य कर रहा है। चम्पा, जूही, बेला एवं कचनार के फूल, फूल रहे हैं। बीच-बीच में सखियाँ मिलकर 'बलिहार' 'बलिहार' बोल उठती हैं। कदम्ब के वृक्ष की डाल से पुष्पों की वर्षा सी हो रही है। जड़ वृक्षों के शरीर में भी रोमांच छा रहा है।

झूले के दृश्य को देखकर जो चेतन पक्षी एवं मृग थे, वे जड़ की भाँति स्तब्ध रह गये। स्वयं श्यामा-श्याम एवं उनकी सखियाँ भी शरीर की सुध-बुध भूल गये। श्रीकृपालुजी कहते हैं- योगी राज शिव इस अद्‌भुत लीला को गोपी रूप धारण कर देख रहे हैं।